

पथ आतत उभौ ग्रामौ गच्छतीमं चामुं च ĀBĀND. UP. 8, 6, 2. दिवी च चतुरा-  
ततम् an dem Himmel nur hängt ihr Auge RV. 1, 22, 20. तत्रा मे नाभि-  
रातता 105, 9. यथैषा पुरुषे कृपितस्मिन्नेतदाततम् PRACŒOP. 3, 3. देवीर्विशः  
परस्त्वाना तनोषि AV. 9, 4, 9. नेदानीं पीतिरुश्चिना ततान nicht jetzt nur  
wartet der Trank auf die A. RV. 5, 76, 3. sich feindlich gegen Jmd rich-  
ten: मा त्वा तंनदीशेषि वीर्यस्य 1, 91, 23. — 3) *ausbreiten; anspannen,  
aufziehen* (ein Gewebe): आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः RV. 6, 39,  
7, 10, 123, 6. KĀT. ÇĀ. 15, 3, 17. नर्व्यं नर्व्यं तनुमा तन्वते दिवि RV. 1,  
159, 4. तत्तुरा तापताम् AV. 10, 2, 17. परः 4, 4, 7. ब्रह्माये ज्येष्ठे दिवमा  
ततान TBR. 2, 4, 2, 10. तव क्रवा रोदसी आ तंतन्ध RV. 3, 6, 5. आ यो वि-  
श्यानि शर्वसा ततान 7, 23, 1. विश्वा मतीरा तंतने 20, 3. धूम आततः 6, 2, 6.  
क्रियते ज्ञाततं सर्वम् alles Angezogene reißt MBH. 5, 4164. वल्लकोवा-  
क्यामातन्वन् HARIV. 4635. भौर्वी धनुषि चातता RAGH. 1, 19, 11, 45. —  
4) *verbreiten, effundere*: दिवि अत्रो जज्ञरुमा ततान RV. 1, 126, 2. आ सू-  
र्यस्य डुद्धिता ततान अत्रो देवेष्वमृतम् 3, 53, 15. रश्मोना तनुषे AV. 13, 2,  
10. येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उग्रहसूयै रश्मिभिरातनोति 12, 1, 15. अग्नि-  
र्दिवि कृष्यमा ततान RV. 10, 80, 4. सुरपतिरपि वर्षं वत्प्रजास्वातनेतु ad  
ÇĀK. 193. भूमिः अग्रमातनोति ÇĀT. (Ba.) 5. यदत पुनरात्मानुस्मृति-  
मोषणं मायामभोगैश्चर्यमेवातनुत verlieh BHĀG. P. 5, 24, 22. — 5)  
*ausführen, bewirken, hervorbringen*: आङ्गतिकलाम् BHARTH. 1, 36. आ-  
तन्वन्पुलकाद्रमम् 50. इदं ते लोभान्धस्य चेष्टितं चेतमि चमत्कारमातनोति  
PRAB. 76, 15. काण्ठप्यामातन्वते (partic.) GĪT. 1, 16. चेतोभिराकूतिभिरात-  
नोति निरङ्कुशं कुशलं चेतं वा BHĀG. P. 5, 11, 4. — *caus. anspannen,  
straff machen*: धनुर्विवा तापया परः AV. 4, 4, 6. 6, 101, 2. — *Vgl. अना-  
तत, आतनि, आतान.*

— अन्वा 1) *sich ausbreiten über, hinreichen über*: तं सोम पितृभिः  
संविदानो ऽनु व्यावापृथिवी आ तंतन्ध RV. 8, 48, 12. यज्ञस्य देहो अष्टधा  
दिवमन्वाततान VS. 8, 62. TBR. 1, 4, 4, 10. PANĀV. Br. 20, 14. भुवो विव-  
स्वानन्वाततान bescheinen AV. 18, 2, 32. — 2) *ausspannen, ausbreiten*:  
अन्वातासीद्वपि तनुमतेम् VS. 13, 53.

— अन्वा *zielen auf* (?): यदेवा अन्वातानैरसुरान्ध्यातन्वत IS. 3, 4,  
6, 2. Nach dem Schol. zu PĀR. GRĀH. 1, 5 = आयुधानि प्राहिएवत.

— उद् *sich in die Höhe richten*: सोर्धोदातनोत् PANĀV. Br. 20, 14.

— पर्या *rings umgeben, umbreiten*: अपसलविमृष्टाभिः स्पन्ध्याभिः पर्या-  
तनोति ÇĀT. Br. 13, 8, 4, 19.

— प्रत्या 1) *sich ausbreiten gegen, bescheinen*: (अग्निः) प्रति व्यावापृ-  
थिवी आ ततान AV. 7, 82, 5. — 2) *gegen Jmd (den Bogen) spannen*:  
उर्ध्वे तिष्ठ प्रत्या तनुषु न्युमित्रीं शोषतात्तिगमहेते RV. 4, 4, 4.

— व्या *verbreiten, hervorbringen, hervorrufen* ÇĪÇ. 8, 56.

— समा *verbreiten, erregen; bewirken, hervorbringen*: समाततेन (viell.  
= संतत *ununterbrochen*) ससनेन MBH. 8, 4205. सरसेन समातन्वक्शेि ब-  
हुमुवर्षाताम् RĀGĀ-TAR. 4, 247.

— उद् *sich nach oben strecken, hinaufstreben*: उद् त्पे मूनवो गिरः  
काष्ठा अस्मैष्वत RV. 1, 37, 10. पृथिव्या अद्युततम् AV. 2, 7, 8. यदुततं  
नि ततनु 7, 90, 3. — *Vgl. उत्तंस, उत्तान.*

— नि 1) *durchdringen*: पुत्राणि चित्रि तताना रज्ञासि RV. 10, 111, 4.

— 2) *nach unten treiben; eindringen —, wurzeln machen*: यदुततं नि  
ततनु AV. 7, 90, 3. भौमो नो राज्ञा नि कृषिं तनोतु 3, 12, 4. नितत इव हीह

III. Theil.

तत्रियो राष्ट्रे वसन्भवति. नितत इव न्ययोधो ऽवरोधिर्मूया प्रतिष्ठित इव  
AIT. Br. 7, 31. — *Vgl. नितलि, नितान.*

— अतिनिस् *zertheilend durchdringen, vom Licht: durchleuchten,  
überstrahlen*: अमी च ये मध्वानो व्यं च मिहं न सूरौ अति निष्टेतन्युः RV.  
1, 141, 18. Nach SĀJ. von स्तन्.

— परि *sich herstrecken um, umspannen, umschlingen, umgeben*:  
परि यो जिह्वयातनत् RV. 8, 61, 18. इमो लोकान्दिग्भिः ÇĀT. Br. 6, 5, 2, 11.  
लोकमद्भिः समुद्रेण 7, 1, 4, 13. सोमपर्याणकनेन परितत्य KĀT. ÇĀ. 7, 9, 9.  
16, 8, 22. 24, 3, 7. KAUC. 28. 32. — *Vgl. परितनु.*

— प्र 1) *sich ausbreiten VS. 13, 21.* प्रतन्वतिरार्षधीरा वदामि *kriechen-  
de, um sich greifende Pflanzen* (vgl. प्रतति) AV. 8, 7, 4. (सिराः) नाभ्यां नि-  
वद्धाः प्रतन्वति समततः SUCĀ. 1, 354, 5. sich ausbreiten über, überziehen,  
bedecken, erfüllen: पिप्पलीप्रततं वनम् R. 3, 76, 25. तालपर्णाप्रतते रम्ये ता-  
लवने HARIV. 3703. स्पौटैः प्रतततनुः SUCĀ. 2, 383, 10. — 2) *ausbreiten, ent-  
fallen, verbreiten VS. 13, 20.* (मैघैः) व्यावापृथिव्योः संसर्गः सततं प्रततेः कृतः  
HARIV. 3379. यत्पितृभ्यः पूर्व्युः करोति । पितृभ्य एव तथ्यज्ञं निष्क्रीय यज्ञ-  
मानः प्रतनुते *fortführen* TBR. 1, 3, 10, 2 (vgl. die v. l. beim Schol. zu  
KĀT. ÇĀ. S. 256.) युगलाङ्गलं प्रतनोति KAUC. 20. मातरिश्वा रूज्ञः प्रतनोति  
कापे SUCĀ. 1, 347, 18. 2, 377, 10. मिहं पावकाः प्रतताः अम्वन् RV. 3, 31,  
20. यशोसि कवयो दिनु प्रतन्वति नः BHARTH. 3, 52. pass. *sich ausdehnen  
von (abl), seinen Anfang nehmen von*: अमुष्मादादित्यात्प्रतापते ता  
(रश्मयः) आसु नाडीषु सप्ता आधो नाडीभ्यः प्रतापते ते ऽमुष्मिन्नादित्ये  
सप्ताः ĀBĀND. UP. 8, 6, 2. — 3) *auszuführen beginnen, beginnen* (ein Opfer):  
फलं प्रकल्प्य पूर्वं हि ततो यज्ञः प्रतापते MBH. 12, 9613. 5, 1665. aus-  
führen, bewirken: प्रतनुते — समोपास्थिते संतापकुतभूरिसर्पिषि घटे पा-  
नोयकुम्भधमम् RĀGĀ-TAR. 2, 78. — 4) *an den Tag legen, offenbar machen*:  
कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतापते (प्रतीपते HIT. III. 96) ÇĪÇ. 2, 30. — *Vgl. प्रतान.*

— वि 1) *sich ausbreiten, sich verbreiten; überziehen, bedecken, er-  
füllen*: वितन्वाना (ः) शमापत्तु ब्रह्मचारिणाः TAIT. UP. 1, 4, 3. प्रज्ञाच्छ्रुयैः —  
यो वितत्य स्थितः खम् MEGH. 39. लोकानिमोक्षान्यशसा वितत्य MBH.  
13, 1858. विततं व्योम सर्वत्र शरज्ञालेन भास्वता R. 3, 33, 13. सुवर्षाज्ञालै-  
र्विततान् (गज्ञान्) HARIV. 13622. प्रस्वेदविन्दुविततं वदनम् KAURAP. 10. —  
2) *ausspannen, ausstrecken, aufziehen* (eine Sehne, ein Gewebe u. s. w.):  
सप्त ततनु RV. 1, 164, 5. 9, 73, 9. ÇĀT. Br. 14, 5, 5, 13. पुनः समव्यहितं  
वयंती RV. 3, 38, 4. (स्या) वितताधि धन्वन् 6, 75, 3. AV. 9, 3, 8, 2, 16. सूत्र  
10, 8, 37. पवित्रम् RV. 9, 67, 23. 10, 5. ÇĀT. Br. 4, 3, 5, 21. 9, 1, 4, 6. KAUC.  
97. 133. वितत्य पत्नौ (गरुडः) MBH. 1, 1335. स्फुरितविततज्ञक् MBH.  
143, 21. विततवितान SADDB. P. 4, 12, a. श्रेणिबन्धाद्वितन्वद्भिस्तन्भी ता-  
रणज्ञम् । सारसैः RAGH. 1, 41. जालं मुविततं तेषां नवसूत्रकृतं तथा MBH.  
13, 2656. विधात्रा मम — इदमिन्द्रजालं वितन्यते KAURĀ. 26, 92. कृत्या  
वितता *gestellt* (wie eine Schlinge) AV. 10, 3, 4. मृत्योर्यत्ति विततस्य पा-  
शम् KAURĀ. P. 4, 2. वितत्य कार्मुकम् *den Bogen spannen* MBH. 1, 5290. वि-  
ततधन्वन् 5282. विततापुध *mit gespanntem Bogen* R. 3, 71, 2. वितत्य  
शार्ङ्गम् (Sch.: आरोपितगुणं कृवा oder आकर्षणेन वितत्य) BHATT. 3, 47.  
vorstecken (das Joch) RV. 10, 101, 3. 4. 1, 115, 2. breiten, bahnen (den  
Weg): अर्धास्य वितति मूकान् AV. 13, 2, 14. TBR. 3, 1, 3, 1. BH. ĀR. UP.  
4, 4, 8. एष पन्था विततो देवयानः ÇĀRĪH. ÇĀ. 15, 17, 9. MURD. UP. 3, 1, 6.  
मन्दं पदानि वितन्वती *die Schritte breiten so v. a. schreiten* GĪT. 5, 19.